E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(2): 179-180
Received: 29-12-2019
Accepted: 01-02-2019

डॉ. भागवत मंडल
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. भागवत मंडल
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

एकैसम शताब्दीक मैथिली उपन्यासमे कथानक विश्लेषण

डॉ. भागवत मंडल

सारांश
उपन्यासक छःओ तत्व मे एकर स्थान सर्वोपरि मानल जाइत अछि। लोकक देहक सदृश्य एकरा उपन्यासक मेरुदण्ड (रीढ़) कहल जाइत अछि। प्रत्येक प्रकारक रचना मे एकर स्थान प्रमुख रहैत अछि। आलोचक लोकनि एकरा उपन्यासक प्रधानतत्व मानैत छथि। जहिना कोनो वस्तुक निर्माण करबाक लेल ओकर आधार स्तम्भ (नीब) होइत अछि। ठीक ओहिना साहित्योक निर्माण होइत अछि। हडसन उपन्यासकें कथा अवश्य कहैत छथि। फॉटर सेहो एहि मतक समर्थन करैत छथि। जहिना एहि सृष्टिक रचना कोना आ कहिना भेल ई प्रश्न हमरा मोन मे उठैत अछि। आसमान कथी पर टिकल अछि। पृथ्वी कथी पर स्थिर अछि। ठीक तहिना एहि साहित्यक रचनाक विषय अछि। जहिना ब्रह्मा सृष्टिक रचना केलनि, तहिना लोक में 'बोली' आ बोली सँ 'भाषा' आ भाषा सँ साहित्यक निर्माण भेल। आ एहि साहित्यक माध्यम सँ मानव समाज एक–दोसराक सम्पर्क मे आयल आओर एक समाज दोसर समाज सँ जुड़ल आ तखन साहित्य सँ अनेको प्रकारक विधाक निर्माण भेल।

प्रस्तावना
कथावस्तु सँ तात्पर्य एहि मे लेखकक व्यक्तित्वक छाप कथावस्तक निर्माणक बिना सम्भव नहि होइत अछि। ई कथा प्राचीने काल सँ कहल जा रहल अछि। जाहि सँ उपन्यास विधाक जन्म भेल अछि। ई कथा हमरा लोकनिक उत्सुकता कें शान्त करैत अछि। एकर प्राण जिज्ञासा होइत अछि। कथा मे लेखकक ध्यान रहैत अछि। जे एकर वाद की हेतए? मुदा कथा मे ध्यान रहैत अछि, जे ई कोना? एहि मे दू वस्तुक अपेक्षा रहैत अछि। 'मेघा' एवं 'स्मृति' ई कथा मात्र उत्सुकताकें शान्त करैत अछि। मध्य युगक कथा साहित्य मे कथा तत्व मुख्य रहैत छल। जाहि सँ मात्र उत्सुकता शान्त होइत छल। उत्सुकता एवं जिज्ञासा कथाकें रोचक बनबैत अछि। एकरा तर्कक कसौटी पर नहि कसल जा सकैत अछि। मुदा कथावस्तुकें अग्नि परीक्षा होइत अछि। एहि दुनूक रोचकता कसौटीकें मानल जाइत अछि। एक आलोचकक अनुसार उपन्यास कला साहित्यक एक प्रधान विशेषता मानल जाइत अछि। कथा साहित्य मे लोक जीवनक दुःख–सुख, आशा–आकांक्षा आओर उत्थान–पतनक वर्णन देखि अपन परिस्थिति सँ ओकर तुलना करैत अछि। आ अपना जीवन मे संतोषक अनुभव करैत अछि।
आदर्श समाजक निर्माण 'इनकलावी' राजनीति सँ नहि भ' सकैत अछि। ई सत् साहित्यक निर्माण आ ओकर प्रचार–प्रसार सँ जाहि मे सर्वाधिक भूमिका उपन्यासक होइत अछि। शिष्ट समाजक निर्माण मे कोना उपन्यासकार अपनाकें ओहि सँ अलग नहि राखि सकैत अछि। जीवन मे समयक संग मानव मूल्यक महत्वकें सेहो देखल जाइत अछि। जीवनक भविष्य पर नियंत्रण नहि राखल जा सकैत अछि। मनुष्यक जीवन मे समयक संग मानव मूल्यक महत्वकें सेहो देखल जाइत अछि। जीवन भविष्य पर नियंत्रण नहि राखल जा सकैत अछि। मनुष्यक जीवन एवं समय मानव मूल्यक डोरी मे बान्हल रहैत अछि।
काव्यकें कल्पना प्रसुत आ उपन्यासकें वास्तविक जीवनक विषय मानल जाइत अछि। उपन्यासकें कल्पनाक सहारा लेब आवश्यक होइत अछि। सौन्दर्य कें उपन्यासक आवश्यक उपकरण मानल जाइत अछि। उपन्यास मनुष्यक वास्तविक जीवनक काल्पनिक कथा होइत अछि। उपन्यास पाठककें मोन मे विश्वास उत्पन्न करैत अछि। रॉवर्ट लिडेल कहैत छथि जे मनुष्यक जीवनमे कोनो मनोरम घटना घटल रहैत अछि। एहिमे उपन्यासकार संसार सँ सामग्री ग्रहण कय पाठकक मोन मे सुन्दर संस्कार जगबैत अछि। उपन्यासकारक माध्यम सँ उपन्यासमे स्वाभाविकता अबैत अछि। जीवन कोनो सोझ रेखाक अनुसार नहि रहैत अछि। एकर राह टेढ़–मेढ़ होइत छैक। एहिमे उपन्यासकार कें सावधान रह' परैत छैक। उपन्यासक घटना मे बन्धनक सहज विकास आओर स्वभाविक गति आनव आवश्यक होइत अछि। नीक उपन्यासमे जीवनक मूल्यांकन करबामे मानव मूल्यक आश्रय सेहो लेल जाइत अछि।
उपन्यासमे कथा एवं कथावस्तुक अन्तर स्पष्ट रहैत अछि। एकर उदाहरण उपन्यासकार राजा आ रानीक मरला सँ केलनि अछि। एहि कथन सँ हमरा लोकनिक उत्सुकता जगैत छैक। आ ई बुझबाक इच्छा उत्पन्न छैक। जे एकर बाद की भेलै।

कथावस्तु मे जिज्ञासा संयोग सँ बेसी कारण पर आश्रित रहैत अछि। कथावस्तु पाठककें स्मृति एवं मेधा दुनूक प्रयोजन होइत अछि। उपन्यास मुख्य रूप सँ एक कथा होइत अछि। फार्टर कहैत छथि जे कथा सभ उपन्यास मे विद्यमान समापवर्त्य होइत अछि। कथा समय क्रम सँ घटनाक वर्णन होइत अछि। जेना जलखईक बाद कलौ, रविक बाद सोम, जीवनक बाद मरण, उत्थानक बाद पतन होइत अछि। एहि तरहसँ अनेक प्रकारक घटनाक वर्णन उपन्यास मे भेल रहैत अछि।

उपन्यासक कथानक समय अनुक्रम कें उपेक्षा नहि क' सकैत अछि। एहि मे घटना कें कारणक पता लगाओल जाइत अछि। कथानककें सुदृढ़ उपन्यास कें आकर्षक बनबैत अछि। प्रो० रमानाथ कहैत छथि, जे कथा साहित्यक जे कोनो रूप हो, कथा मात्रक मूलभुत वस्तु होइत अछि। कथानकक घटनाचक्र। उपन्यासक कोनो घटना शुन्य मे नहि घटैत अछि। घटना कोनो परिवेश, परिस्थिति विशेष आ व्यक्ति विशेष मे घटैत छैक जकर विकास वर्णन द्वारा अथवा कथोपकथन द्वारा होइत अछि। चरित्र, परिवेश, परिस्थिति इत्यादि सब कथा मे रहितै छैक। आ कथा विशेष मे वस्तु विशेषक प्रधानता रहैत अछि। कथाक प्राण कथानक होइत अछि। आ शेष सब वस्तु कथानक सदृशे प्रस्फुटित होइत अछि। घटना क्रम सँ बहराइत ओहि प्रकारक कथाकें उच्च कोटिक कथा मानल जाइत अछि। अंगीक सुन्दरता मानल जाइत अछि। अंग विन्यासक संतुलन मे–

उपन्यासकार कें अनेक तरहक ज्ञान राख परैत छैक। एकर बिना कथानक निर्माण मे त्रुटि रहि जाइत अछि। जेना कोनो वस्तुक स्वाद जानबाक लेल ओकर अंश मात्रक आवश्यकता होइत अछि। ठीक ओहिना उपन्यासकार सभ विषयक किछु न किछु ज्ञान राखि जीवनक अनुभव सिद्ध कए सकैत छथि। एकर विषय मनुष्यक कार्य–व्यापार होइत अछि। उपन्यास कथानक दैनिक जीवन सँ ग्रहण कयल जाइत अछि। ओ घटना जकर विन्यास उपन्यासकार कथानक रूप मे करैत अछि। काल्पनिक रहितहुँ वास्तविक रहैत अछि। एकर कथावस्तु आकारे मे पैघ नहि, जटिल सेहो होइत अछि।

उपन्यासकें जीवनक सर्वांगीण चित्र उपस्थित करए परैत छैक। जीवन संघर्षक व्यापक चित्र उपस्थित करए परैत छैक। एकर कथानक उद्येश्य जीवनकें व्यापक मूल्यक अभिव्यक्ति रहैत छैक। रिचार्डसन एक घटनाक उल्लेख करैत कहैत छथि जे सात सितम्बरकें वृहस्पति दिन छओ बाजिकें चालीस मिनट पर क्लोरिसाँक देहान्त भेल। उपन्यासक घटना वास्तविक जीवनक समान होइत अछि। कोनो व्यक्ति विशेष कोनो स्थान एवं निश्चित समयक रहैत अछि। उपन्यासकार घटनाक समय एवं स्थानक वर्णन कए पाठककें मोनमे विश्वासक भावना जगबैत अछि। जेना अनियंत्रित भीड़ कें सभा संगोष्ठी नहि कहल जा सकैत अछि। ठीक एहि प्रकार सँ उपन्यासोमे होइत अछि। उपन्यासक रूप देबाक लेल घटनाकें व्यवस्थित रूपे राखब आवश्यक मानल जाइत अछि।

कला जीवन मे सुन्दर वस्तुक चयन कए, खराब वस्तुक त्याग करैत अछि उपन्यास मे जीवन आ सुरूचि संगे–संग चलैत अछि। उपन्यासक यथार्थता शैलीक यथार्थता पर निर्भर करैत अछि। हडसन कहैत छथि जे उपन्यास मे नाम आ तिथि कें छोरि सब सत्य रहैत अछि। उपन्यास संभव एवं असभव सत्यकें अपन क्षेत्र बनबैत अछि। आइ–काल्हि उपन्यास संभव सत्यकें स्थान दैत अछि। तिलिस्मि उपन्यास रोमान्स आदि फॉटंरक अनुसार कथावस्तु श्रोता कन्दरा मे रहनिहार जनसाधारण अत्याचारी सुल्तान एवं सिनेमा दर्शक नहि भए सकैत अछि।

सामाजिक जीवन सँ सम्बन्धित वस्तुक समावेश उपन्यास मे रहैत अछि। 'गप्प' तँ मनोरंजनक साधन होइत अछि। उपन्यास रूचिक संस्कार करैत अछि। उपन्यास मे घटना संघटन एवं कथावस्तु पर विशेष ध्यान देल जाइत अछि। अंगरेजी उपन्यासक प्रसिद्ध लेखिका जेन आस्टिन अपन उपन्यास मे किछु स्थानकें छोरि आन तरहक प्रसंगकें त्याग कयने छथि। उपन्यास एहेन कला अछि जे कम सँ कम बन्धन कें स्वीकार करैत अछि। एहिमे लोक अपन विगत चित्र देखैत अछि। ऐतिहासक उपन्यासकें परोक्षक ज्ञान निर्भर करए परैत छनि। जाहि मे आधार कथा होइत अछि। ओकरा सामान्य कथानक कहल जाइत अछि।

कथावस्तुकें ध्यानमे राखि उपन्यासकें अनेक बर्ग मे विभाजित कयल जाइत अछि। कथावस्तु कें ध्यान मे राखि उपन्यासकें सामाजिक मनोवैज्ञानिक, नैतिक एवं जासूसी आदि श्रेणी मे राखल जा सकैत अछि।

उपन्यास कलाक विकासकें ध्यानमे रखैत एक आलोचक उपन्यासकें तीनि प्रधान श्रेणी मे बँटलनि अछि। चरित्र प्रधान, नाटकीय आ घटना प्रधान। घटना प्रधान उपन्यास मे कथावस्तुकें व्यवस्थित विकास रहैत अछि। पात्र कथावस्तुक विकासक लेल ओहि मे जोड़ल गेल रहैत अछि। चरित्र प्रधान उपन्यास मे पात्रक व्यक्तित्व विकास देखाओल गेल रहैत अछि। घटना प्रधान उपन्यास मे भाग्यक पैघ हाथ रहैत छैक।

चरित्र प्रधान उपन्यास मे यथार्थ आओर आदर्श मे विरोधक चित्रण रहैत अछि। नाटकीय उपन्यास मे विभिन्न प्रकारक अनुभवक चित्र रहैत अछि। एतेहासिक उपन्यास अनेक प्रकारक होइत अछि। युग प्रतिनिधि, व्यक्ति प्रतिनिधि अतिरंजनात्मक प्रभृति।

उपरोक्त उपन्यासक अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक आ सामाजिक उपन्यास सेहो होइत अछि। मनोवैज्ञानिक उपन्यास मे लोकक मानसिक अवस्थाक चित्र रहैत अछि। सामाजिक उपन्यास अत्यन्त व्यापक होइत अछि। एहि प्रकारक उपन्यास रूचिपूर्ण भए सकैत अछि।

उपन्यासक व्यापक क्षेत्रक अन्तर्गत विभिन्न प्रकारक विषय वस्तुक स्थान रहैत छैक। मनुष्यक सामाजिक जीवन विभिन्न समस्याक अध्ययन उपन्यासमे रहैत अछि। कथावस्तुकें उपन्यासक प्रधान तत्व मानल जाइत अछि। कारणाश्रित घटनाक शृंखलाबद्ध नियोजन सँ कथनकक निर्माण होइत अछि 'पुनर्विवाह', 'चन्द्र ग्रहण', 'सुमति' प्रभृति कें आरम्भिक उपन्यास मानल जाइत अछि। सामाजिक जीवनक घटना कें ग्रहण कय कथावस्तुक निर्माण मे मैथिली उपन्यास मे 'जनसीदन' जीक स्थान प्रथम छनि। हिनक उपन्यास मे 'निर्दयीसासु', 'कलियुगी सन्यासी', 'शशिकला' एवं पुनर्विवाह मे 'पुनर्विवाह'क स्थान महत्वपूर्ण अछि।

चन्द्रग्रहणसँ मैथिली उपन्यास मे नव अध्यायक श्री गणेश होइत अछि। श्री हरिमोहन झा पहिल उपन्यासकार छथि, जे मनोरंजन सामग्रीक संग सशक्त कथानकक निर्माण कयने छथि।

निष्कर्षः

जीवनक सम्यक निरीक्षण करब उपन्यास कारक कर्तव्य होइत अछि। मैथिली उपन्यास मे कथावस्तुक विकासक दृष्टि सँ भलमानुष उपन्यासक महत्वपूर्ण स्थान छैक। कथावस्तुक विकास में यात्रीजीक पारो कें सेहो महत्वपूर्ण स्थान छैक यात्री जीक 'नवतुरिया'क कथावस्तु मिथिलाक सामाजिक जीवन पर आधारित अछि।

संदर्भः

1. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
2. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा ''श्रीश'', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
3. मैथिली उपन्यासक विकास– अशोक 'अविचल' (संपादक)
4. मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार– भूपेन्द्र कुमार चौधरी, प्रकाशन ग्रन्थालय, दरभंगा
5. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक